(२)

पुरश्चरण-रसोल्लासे ईश्वर-देवी-सम्वादे

श्रीगुरु-कवचं

पूर्व-पीठिका

।। श्रीईश्वर उवाच ।।

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि, गुह्याद्-गुह्य-तरं महत् ।
लोकोपकारकं प्रश्नं, न केनापि कृतं पुरा ।।
अद्य प्रभृति कस्यापि, न ख्यातं कवचं मया ।
देशिकाः बहवः सन्ति, मन्त्र - साधन - तत्पराः ।।
न तेषां जायते सिद्धिः, मन्त्रैर्वा चक्र - पूजनैः ।
गुरोर्विधानं कवचमज्ञात्वा क्रियते जपः ।
वृथाश्रमो भवेत् तस्य, न सिद्धिर्मन्त्र - पूजनैः ।।
गुरु-पादं पुरस्कृत्य, प्राप्यते कवचं शुभम् ।
तदा मन्त्रस्य यन्त्रस्य, सिद्धिर्भवति तत्-क्षणात् ।
सु-गोप्यं तु प्रजप्तव्यं, न वक्तव्यं वरानने ।।

।। सविधि श्रीगुरु-कवच-स्तोत्रम् ।।

विनियोगः—ॐ नमोऽस्य श्रीगुरु-कवच-नाम-मन्त्रस्य परम-ब्रह्म ऋषिः, सर्व-वेदानुज्ञो देव-देवो श्रीआदि-शिवः देवता, नमो हंसौं हंसः ह-स-क्ष-म-ल-व-र-यूं सोऽहं हंसः बीजं, स-ह-क्ष-म-ल-व-र-यीं शक्तिः, हंसः सोऽहं कीलकं, समस्त-श्रीगुरु-मण्डल - प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीपरम-ब्रह्मर्षये नमः शिरसि । सर्व-वेदानुज्ञ-देव-देव श्रीआदि-शिव-देवतायै नमः हृदि । नमः हंसौं हंसः ह-स-क्ष-म-ल-व-र-यूं सोऽहं हंसः बीजाय नमः गुह्ये । स-ह-क्ष-म-ल-व-र-यीं शक्तये नमः नाभौ । हंसः सोऽहं कीलकाय नमः पादयोः । समस्त-श्रीगुरु-मण्डल-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
हंसां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
हंसीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
हंसूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
हंसैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
हंसौं	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हंसः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान--

श्रीसिद्ध-मानव-मुखा गुरवः स्वरूपं, संसार-दाह-शमनं द्वि-भुजं त्रि-नेत्रम् ।
वामाङ्ग-शक्ति-सकलाभरणैर्विभूषं, ध्यायेज्जपेत् सकल-सिद्धि-फल-प्रदं च ।।

मानस-पूजन--

लं पृथिव्यात्मकं गन्ध-तन्मात्र-प्रकृत्यात्मकं गन्धं स-शक्तिकाय श्रीगुरवे समर्पयामि नमः,
हं आकाशात्मकं शब्द-तन्मात्र-प्रकृत्यात्मकं पुष्पं स-शक्तिकाय श्रीगुरवे समर्पयामि नमः,
यं वाय्वात्मकं स्पर्श-तन्मात्र-प्रकृत्यात्मकं धूपं स-शक्तिकाय श्रीगुरवे घ्रापयामि नमः,
रं वह्न्यात्मकं रूप-तन्मात्र-प्रकृत्यात्मकं दीपं स-शक्तिकाय श्रीगुरवे समर्पयामि नमः,
वं अमृतात्मकं रस-तन्मात्र-प्रकृत्यात्मकं नैवेद्यं स-शक्तिकाय श्रीगुरवे समर्पयामि नमः,
सं सर्वात्मिकां ताम्बूलादि-सर्वोपचार-पूजां स-शक्तिकाय श्रीगुरवे समर्पयामि नमः ।

।। कवच-स्तोत्रम् ।।

ॐ नमः प्रकाशानन्द-नाथः तु, शिखायां पातु मे सदा ।
पर-शिवानन्द-नाथः, शिरो मे रक्षयेत् सदा ।।१
पर-शक्ति-दिव्या-नन्द-नाथो भाले च रक्षतु ।
कामेश्वरानन्द,-नाथो, मुखं रक्षतु सर्व-धृक् ।।२
दिव्यौघो मस्तकं देवि ! पातु सर्व-शिरः सदा ।
कण्ठादि-नाभि-पर्यन्तं, सिद्धौघा गुरवः प्रिये ।।३
भोगानन्द-नाथ गुरुः, पातु दक्षिण-बाहुकम् ।
समयानन्द-नाथश्च, सन्ततं हृदयेऽवतु ।।४
सहजानन्द-नाथश्च, कटिं नाभिं च रक्षतु ।
एष स्थानेषु सिद्धौघाः, रक्षन्तु गुरवः सदा ।।५
अधरे मानवौघाश्च, गुरवः कुल-नायिके !
गगनानन्द-नाथश्च, गुल्फयोः पातु सर्वदा ।।६
नीलौघानन्द-नाथश्च, रक्षयेत् पाद-पृष्ठतः ।
स्वात्मानन्द-नाथ-गुरुः, पादांगुलीश्च रक्षतु ।।७
कन्दोलानन्द-नाथश्च, रक्षेत् पाद-तले सदा ।
इत्येवं मानवौघाश्च, न्यसेन्नाभ्यादि-पादयोः ।।८
गुरुर्मे रक्षयेदुर्ध्वां, सलिले परमो गुरुः ।
परापर-गुरुर्वह्नौ, रक्षयेत् शिव-वल्लभे ।।९

परमेष्ठी - गुरुश्चैव, रक्षयेत् वायु - मण्डले ।
शिवादि - गुरवः साक्षात्, आकाशे रक्षयेत् सदा ।।१०
इन्द्रो गुरुः पातु पूर्वे, आग्नेयां गुरुरग्नयः ।
दक्षे यमो गुरुः पातु, नैऋत्यां निर्ऋतिर्गुरुः ।।११
वरुणो गुरुः पश्चिमे, वायव्यां मारुतो गुरुः ।
उत्तरे धनदः पातु, ऐशान्यामीश्वरो गुरुः ।।१२
ऊर्ध्वं पातु गुरुर्ब्रह्मा, अनन्तो गुरुरप्यधः ।
एवं दश - दिशः पान्तु, इन्द्रादि - गुरवः क्रमात् ।।१३
शिरसः पाद - पर्यन्तं, पान्तु दिव्यौघ - सिद्धयः ।
मानवौघाश्च गुरवो, व्यापकं पान्तु सर्वदा ।।१४
सर्वत्र गुरु - रूपेण, संरक्षेत् साधकोत्तमम् ।
आत्मानं गुरु - रूपं च, ध्यायेन् मन्त्रं सदा बुधः ।।१५

फल-श्रुतिः

इत्येवं गुरु - कवचं, ब्रह्म - लोकेऽपि दुर्लभम् ।
तव प्रीत्या मया ख्यातं, न कस्य कथितं प्रिये ।।१
पूजा - काले पठेद् यस्तु, जप - काले विशेषतः ।
त्रैलोक्य - दुर्लभं देवि ! भुक्ति - मुक्ति - फल-प्रदम् ।।२
सर्व - मन्त्र - फलं तस्य, सर्व - यन्त्र - फलं तथा ।
सर्व - तीर्थ - फलं देवि ! यः पठेत् कवचं गुरोः ।।३
अष्ट - गन्धेन भूर्जे च, लिख्यते चक्र - संयुतम् ।
कवचं गुरु - पङ्क्तेस्तु, भक्त्या च शुभ - वासरे ।।४
पूजयेत् धूप - दीपाद्यैः, सुधाभिः सित - संयुतैः ।
तर्पयेत् गुरु - मन्त्रेण, साधकः शुद्ध - चेतसा ।।५
धारयेत् कवचं देवि ! इह भूत - भयापहम् ।
पठेन्मन्त्री त्रिकालं हि, स मुक्तो भव-बन्धनात् ।
एवं कवचं परमं, दिव्य - सिद्धौघ - कलावान् ।।६

हिन्दी श्रीगुरु-कवच

।। पूर्व-पीठिका ।।

श्री ईश्वर बोले— हे देवि ! संसार के लिए कल्याणकारी प्रश्न तुमने पूछा है, जिसे पहले किसी ने नहीं पूछा । अत्यन्त गोप्य से भी गोपनीय उसे मैं कहूँगा । यह 'कवच' आज तक मैंने किसी से नहीं कहा है । मन्त्र-साधना में बहुत से साधक तत्पर रहते हैं किन्तु उन्हें मन्त्रों या चक्र-पूजनों के द्वारा सिद्धि नहीं मिलती । गुरु के विधान-रूप कवच को बिना जाने जो जप करता है, उसका परिश्रम व्यर्थ होता है । मन्त्र और पूजनों से सिद्धि नहीं मिलती । गुरु-चरणों को आगे कर कल्याणकारी कवच को जब साधक प्राप्त करता है, तब उसे मन्त्र और यन्त्र की सिद्धि मिल जाती है । हे सुमुखि ! अत्यन्त गोपनीय भाव से इसका जप करना चाहिए, किसी से बताना नहीं चाहिए ।

।। विधि-सहित श्रीगुरु-कवच-स्तोत्र ।।

पृष्ठ १६—२० में प्रकाशित विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, कर-न्यास और अङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

मानवीय मुखवाले सिद्ध-गुरुओं का स्वरूप द्वि-भुज और द्वि-नेत्र है, जो संसार के दुःखों को शान्त करता है । समस्त अलङ्कारों से सज्जित शक्ति द्वारा उस स्वरूप का बाँयाँ अङ्ग सुशोभित है । ऐसे स्वरूप का ध्यान कर जप करने से वह सभी सिद्धियों का फल प्रदान करता है ।

इस प्रकार ध्यान कर पृष्ठ २० पर उल्लिखित मानस पूजन कर कवच-स्तोत्र का पाठ करे—

।। कवच-स्तोत्र ।।

ॐ नमस्कार । प्रकाशानन्दनाथ सदा मेरी शिखा की रक्षा करें, पर-शिवानन्दनाथ मेरे शिर की सदा रक्षा करें ।।१।। पर-शक्ति-दिव्यानन्दनाथ भाल (कपाल) की रक्षा करें और सबको धारण करने-वाले कामेश्वरानन्दनाथ मुख की रक्षा करें ।।२।। हे देवि ! दिव्यौघ मस्तक और सारे शिर की रक्षा करें । हे प्रिये ! सिद्धौघ गुरु कण्ठ से लेकर नाभि तक रक्षा करें ।।३।। भोगानन्दनाथ गुरु दाईं भुजा की रक्षा करें और समयानन्दनाथ निरन्तर हृदय की रक्षा करें ।।४।। सहजानन्दनाथ कटि (कमर) और नाभि की रक्षा करें । इन स्थानों में सिद्धौघ गुरु सदा रक्षा करें ।।५।। हे कुल-नायिके ! अधर में मानवौघ गुरु और दोनों गुल्फों (घुटनों) में गगनानन्दनाथ सदा रक्षा करें ।।६।। नीलौघानन्दनाथ पैर के पिछले भाग की रक्षा करें और स्वात्मानन्दनाथ गुरु पैर की अँगुलियों की रक्षा करें ।।७।। कन्दोलानन्द-नाथ सदा पैर के तलवों की रक्षा करें । इस प्रकार मानवौघ गुरुओं का न्यास (स्थापन) नाभि से पैरों तक करे ।।८।। पृथ्वी पर मेरे गुरु रक्षा करें, जल में परम गुरु और हे शिव-प्रिये ! अग्नि में परापर गुरु रक्षा करें ।।९।। वायु-मण्डल में परमेष्ठी-गुरु रक्षा करें और साक्षात् शिवादि गुरु सदा आकाश में रक्षा करें ।।१०।।

गुरु इन्द्र पूर्व में रक्षा करें, आग्नेय-कोण में गुरु अग्नियाँ, दाईं ओर गुरु यम और नैर्ऋत-कोण में निर्ऋति रक्षा करें ।११। पश्चिम में गुरुण वरुण (जल-देव), वायव्य कोण में गुरु मारुत (पवन देव), उत्तर में धनद (कुबेर) और ऐशान कोण में गुरु ईश्वर रक्षा करें ।।१२।। ऊपर गुरु ब्रह्मा और नीचे गुरु अनन्त रक्षा करें । इस प्रकार दसों दिशाओं की रक्षा क्रमशः इन्द्रादि गुरु करें ।।१३।। शिर से पैर तक दिव्यौघ की सिद्धियाँ रक्षा करें और मानवौघ गुरु सदैव व्यापक रूप से रक्षा करें ।।१४।। सभी स्थानों में गुरु-रूप से उत्तम साधक की रक्षा करें । बुद्धिमान् साधक को सदैव आत्मा को और मन्त्र को गुरु-रूप में ध्यान करना चाहिए ।।१५।।

(शेष पृष्ठ २४ पर)